فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۲۹﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ

तो अब जान जाओगे[58] कौन खुली गुमराही में है तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुब्ह़ को

مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ یَّاْتِیْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِیْنٍ ﴿۳۰﴾ ع

तुम्हारा पानी ज़मीन में धंस जाए[59] तो वोह कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता[60]

اٰیاتها ٥٢ ﴿٦٨ سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ ٢﴾ رکوعاتها ٢

सूरए क़लम मक्किय्या है, इस में बावन आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला[1]

نٓ وَ الْقَلَمِ وَ مَا یَسْطُرُوْنَ ﴿۱﴾ مَاۤ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ﴿۲﴾ وَ اِنَّ

क़लम[2] और उन के लिखे की क़सम[3] तुम अपने रब के फ़ज़्ल से मज्नून नहीं[4] और ज़रूर

لَكَ لَاَجْرًا غَیْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿۳﴾ وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ ﴿۴﴾ فَسَتُبْصِرُ وَ

तुम्हारे लिये बे इन्तिहा सवाब है[5] और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है[6] तो अब कोई दम जाता है कि तुम भी देख

یُبْصِرُوْنَ ﴿۵﴾ بِاَیِّىكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿۶﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ

लोगे और वोह भी देख लेंगे[7] कि तुम में कौन मज्नून था बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उस की राह

سَبِیْلِهٖ وَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِیْنَ ﴿۷﴾ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۸﴾ وَدُّوْا لَوْ

से बहके और वोह ख़ूब जानता है जो राह पर है तो झुटलाने वालों की बात न सुनना वोह तो इस आरज़ू में हैं कि

58 : या'नी वक़्ते अ़ज़ाब 59 : और इतनी गहराई में पहुंच जाए कि डोल वग़ैरा से हाथ न आ सके 60 : कि उस तक हर एक का हाथ पहुंच सके, येह सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की क़ुदरत में है तो जो किसी चीज़ पर क़ुदरत न रखे उन्हें क्यूं इबादत में उस क़ादिरे बरह़क़ का शरीक करते हो। 1 : इस सूरत का नाम सूरए नून व सूरए क़लम है, येह सूरत मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बावन 52 आयतें, तीन सो 300 कलिमे, एक हज़ार दो सो छप्पन 1256 ह़र्फ़ हैं। 2 : अल्लाह तआ़ला ने क़लम की क़सम ज़िक्र फ़रमाई, उस क़लम से मुराद या तो लिखने वालों के क़लम हैं जिन से दीनी दुन्यवी मसालेह़ व फ़वाइद वाबस्ता हैं और या क़लमे आ'ला मुराद है जो नूरी क़लम है और उस का तूल फ़ासिलए ज़मीनो आस्मान के बराबर है। उस ने ब हुक्मे इलाही लौह़े मह़फ़ूज़ पर क़ियामत तक होने वाले तमाम उमूर लिख दिये। 3 : या'नी आ'माल। बनी आदम के निगहबान फ़िरिश्तों के लिखे की क़सम 4 : उस का लुत्फ़ो करम तुम्हारे शामिले ह़ाल है, उस ने तुम पर इन्आ़म व एह़सान फ़रमाए, नुबुव्वत और ह़िक्मत अ़ता की, फ़साह़ते ताम्मा, अ़क़्ले कामिल, पाकीज़ा ख़साइल, पसन्दीदा अख़्लाक़ अ़ता किये, मख़्लूक़ के लिये जिस क़दर कमालात इम्कान में हैं सब अ़ला वज्हिल कमाल अ़ता फ़रमाए, हर ऐब से ज़ाते आ़ली सिफ़ात को पाक रखा, इस में कुफ़्फ़ार के उस मक़ूले का रद है जो उन्हों ने कहा था "یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْ نُزِّلَ عَلَیْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ"। 5 : तब्लीगे़ रिसालत व इज़्हारे नुबुव्वत और ख़ल्क़ को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ दा'वत देने और कुफ़्फ़ार की उन बेहूदा बातों और इफ़्तिराओं और त़ा'नों पर सब्र करने का। 6 : ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से दरयाफ़्त किया गया तो आप ने फ़रमाया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ क़ुरआन है। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे मकारिमे अख़्लाक़ व मह़ासिने अफ़्आ़ल की तक्मील व तत्मीम के लिये मब्ऊ़स फ़रमाया। 7 : या'नी अहले मक्का भी जब

www.dawateislami.net

تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ﴿۹﴾ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ﴿۱۰﴾ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ

किसी त़रह़ तुम नरमी करो[8] तो वोह भी नर्म पड़ जाएं और हर ऐसे की बात न सुनना जो बड़ा क़समें खाने वाला[9] ज़लील बहुत त़ा'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता

بِنَمِيْمٍ ﴿۱۱﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿۱۲﴾ عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ﴿۱۳﴾

फिरने वाला[10] भलाई से बड़ा रोकने वाला[11] ह़द से बढ़ने वाला गुनहगार[12] दुरुश्त ख़ू[13] इस सब पर तुर्रा येह कि उस की अस्ल में ख़त़ा[14]

اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّ بَنِيْنَ ﴿۱۴﴾ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ

इस पर कि कुछ माल और बेटे रखता है जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी जाएं[15] कहता है अगलों की

الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۵﴾ سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ﴿۱۶﴾ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَاۤ

कहानियां हैं[16] क़रीब है कि हम उस की सुअर की सी थूथनी पर दाग़ लगा देंगे[17] बेशक हम ने उन्हें जांचा[18] जैसा उस बाग़

اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ﴿۱۷﴾ وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ﴿۱۸﴾

वालों को जांचा था[19] जब उन्हों ने क़सम खाई कि ज़रूर सुब्ह़ होते उस के खेत काट लेंगे[20] और اِنْ شَآءَ اللّٰه न कहा[21]

उन पर अ़ज़ाब नाज़िल होगा **8 :** दीन के मुआ़मले में उन की रिआ़यत कर के **9 :** कि झूटी और बात़िल बातों पर क़समें खाने में दिलेर है। मुराद इस से या वलीद बिन मुग़ीरा है या अस्वद बिन यग़ूस या अख़्नस बिन शुरैक़, आगे उस की सिफ़तों का बयान होता है **10 :** ताकि लोगों के दरमियान फ़साद डाले **11 :** बख़ील, न ख़ुद ख़र्च करे न दूसरे को नेक कामों में ख़र्च करने दे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इस के मा'ना में येह फ़रमाया है कि भलाई से रोकने से मक़्सूद इस्लाम से रोकना है क्यूं कि वलीद बिन मुग़ीरा अपने बेटों और रिश्तेदारों से कहता था कि अगर तुम में से कोई इस्लाम में दाख़िल हुवा तो मैं उसे अपने माल में से कुछ न दूंगा। **12 :** फ़ाजिर बदकार **13 :** बद मिज़ाज बद ज़बान **14 :** या'नी बद गोहर, तो उस से अफ़्आ़ले ख़बीसा का सुदूर क्या अ़जब। मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो वलीद बिन मुग़ीरा ने अपनी मां से जा कर कहा कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने मेरे ह़क़ में दस बातें फ़रमाई हैं, नव को तो मैं जानता हूं कि मुझ में मौजूद हैं लेकिन दसवीं बात अस्ल में ख़त़ा होने की इस का ह़ाल मुझे मा'लूम नहीं या तू मुझे सच सच बता दे वरना मैं तेरी गरदन मार दूंगा, इस पर उस की मां ने कहा कि तेरा बाप नामर्द था, मुझे अन्देशा हुवा कि वोह मर जाएगा तो उस का माल ग़ैर ले जाएंगे तो मैं ने एक चरवाहे को बुला लिया, तू उस से है। **फ़ाएदा :** वलीद ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की शान में एक झूटा कलिमा कहा था मज्नून, उस के जवाब में **अल्लाह** तआ़ला ने उस के दस वाक़ेई उ़यूब ज़ाहिर फ़रमा दिये, इस से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की फ़ज़ीलत और शाने मह़बूबिय्यत मा'लूम होती है। **15 :** या'नी कुरआने मजीद **16 :** और इस से उस की मुराद येह होती है कि झूट है और उस का येह कहना इस का नतीजा है कि हम ने उस को माल और औलाद दी। **17 :** या'नी उस का चेहरा बिगाड़ देंगे और उस की बद बात़िनी की अ़लामत उस के चेहरे पर नुमूदार कर देंगे ताकि उस के लिये सबबे आ़र हो, आख़िरत में तो येह सब कुछ होगा ही मगर दुन्या में भी येह ख़बर पूरी हो कर रही और उस की नाक दग़ीली (ऐबदार) हो गई, कहते हैं कि बद्र में उस की नाक कट गई। (كَذَا قِيلَ خَازِن وَمَدَارِك وَجَلَالَيْن) "وَاعْتُرِضَ عَلَيْهِ بِاَنَّ وَلِيْدًا كَانَ مِنَ الْمُسْتَهْزِئِيْنَ الَّذِيْنَ مَاتُوْا قَبْلَ بَدْرٍ" **18 :** या'नी अहले मक्का को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की दुआ़ से जो आप ने फ़रमाई थी कि या रब ! इन्हें ऐसी क़ह़त़ साली में मुब्तला कर जैसी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के ज़माने में हुई थी, चुनान्चे अहले मक्का क़ह़त़ की ऐसी मुसीबत में मुब्तला किये गए कि वोह भूक की शिद्दत में मुर्दार और हड्डियां तक खा गए और इस त़रह़ आज़्माइश में डाले गए। **19 :** उस बाग़ का नाम ज़रवान था, येह बाग़ सन्आ़ यमन से दो फ़रसंग के फ़ासिले पर सरे राह था, उस का मालिक एक मर्दे सालेह़ था जो बाग़ के मेवे कसरत से फ़ुक़रा को देता था, जब बाग़ में जाता फ़ुक़रा को बुला लेता तमाम गिरे पड़े मेवे फ़ुक़रा ले लेते और बाग़ में बिस्तर बिछा दिये जाते जब मेवे तोड़े जाते तो जितने मेवे बिस्तरों पर गिरते वोह भी फ़ुक़रा को दे दिये जाते और जो ख़ालिस अपना ह़िस्सा होता उस से भी दसवां ह़िस्सा फ़ुक़रा को दे देता, इसी त़रह़ खेती काटते वक़्त भी उस ने फ़ुक़रा के हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा मुक़र्रर किये थे, इस के बा'द उस के तीन बेटे वारिस हुए, उन्हों ने बाहम मश्वरा किया कि माल क़लील है कुम्बा बहुत है अगर वालिद की त़रह़ हम भी ख़ैरात जारी रखें तो तंगदस्त हो जाएंगे, आपस में मिल कर क़समें खाईं कि सुब्ह़ तड़के लोगों के उठने से पहले बाग़ चल कर मेवे तोड़ लें, चुनान्चे इर्शाद होता है : **20 :** ताकि मिस्कीनों को ख़बर न हो। **21 :** येह लोग तो क़समें खा कर सो गए।

www.dawateislami.net

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ (١٩) فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ (٢٠)

तो उस पर[22] तेरे रब की त़रफ़ से एक फेरी करने वाला फेरा कर गया[23] और वोह सोते थे तो सुब्ह़ रह गया[24] जैसे फल टूटा हुवा[25]

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ (٢١) اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ (٢٢)

फिर उन्हों ने सुब्ह़ होते आपस में एक दूसरे को पुकारा कि तड़के (सुब्ह़ सवेरे) अपनी खेती को चलो अगर तुम्हें काटनी है

فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ (٢٣) اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ

तो चले और आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहते जाते थे कि हरगिज़ आज कोई मिस्कीन तुम्हारे बाग़ में

مِّسْكِيْنٌ (٢٤) وَّ غَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ (٢٥) فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْۤا اِنَّا

आने न पाए और तड़के चले अपने इस इरादे पर क़ुदरत समझते[26] फिर जब उसे देखा[27] बोले बेशक हम

لَضَآلُّوْنَ (٢٦) بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ (٢٧) قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ

रास्ता बहक गए[28] बल्कि हम बे नसीब हुए[29] उन में जो सब से ग़नीमत था बोला क्या मैं तुम से नहीं कहता था

لَوْ لَا تُسَبِّحُوْنَ (٢٨) قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ (٢٩) فَاَقْبَلَ

कि तस्बीह़ क्यूं नहीं करते[30] बोले पाकी है हमारे रब को बेशक हम ज़ालिम थे अब एक

بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ (٣٠) قَالُوْا يٰوَيْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ (٣١)

दूसरे की त़रफ़ मलामत करता मुतवज्जेह हुवा[31] बोले हाए ख़राबी हमारी बेशक हम सरकश थे[32]

عَسٰى رَبُّنَاۤ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَاۤ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ (٣٢) كَذٰلِكَ

उम्मीद है कि हमें हमारा रब इस से बेहतर बदल दे हम अपने रब की त़रफ़ रग़बत लाते हैं[33] मार

الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ (٣٣) اِنَّ

ऐसी होती है[34] और बेशक आख़िरत की मार सब से बड़ी क्या अच्छा था अगर वोह जानते[35] बेशक

22 : या'नी बाग़ पर 23 : या'नी एक बला आई ब हुक्मे इलाही आग नाज़िल हुई और बाग़ को तबाह कर गई 24 : वोह बाग़ 25 : और उन लोगों को कुछ ख़बर नहीं, येह सुब्ह़ तड़के उठे 26 : कि किसी मिस्कीन को न आने देंगे और तमाम मेवे अपने क़ब्ज़े में लाएंगे। 27 : या'नी बाग़ को कि उस मेवे का नामो निशान नहीं 28 : या'नी किसी और बाग़ पर पहुंच गए, हमारा बाग़ तो बहुत मेवादार है, फिर जब ग़ौर किया और उस के दरो दीवार को देखा और पहचाना कि अपना ही बाग़ है तो बोले 29 : इस के मनाफ़ेअ़ से मिस्कीनों को न देने की निय्यत कर के। 30 : और इस इरादए बद से तौबा क्यूं नहीं करते और अल्लाह तआ़ला की ने'मत का शुक्र क्यूं नहीं बजा लाते 31 : और आख़िर कार उन सब ने ए'तिराफ़ किया कि हम से ख़त़ा हुई और हम ह़द से मुतजाविज़ हो गए। 32 : कि हम ने अल्लाह तआ़ला की ने'मत का शुक्र न किया और बाप दादा के नेक त़रीक़े को छोड़ा 33 : उस के अ़फ़्वो करम की उम्मीद रखते हैं, उन लोगों ने सिद्क़ो इख़्लास से तौबा की तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इस के इवज़ इस से बेहतर बाग़ अ़त़ा फ़रमाया जिस का नाम बाग़े ह़यवान था और उस में कस्रते पैदावार और लत़ाफ़ते आबो हवा का येह आ़लम था कि उस के अंगूरों का एक ख़ोशा एक गधे पर बार किया जाता था। 34 : ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का ! होश में आओ येह तो दुन्या की मार है 35 : अ़ज़ाबे आख़िरत को और उस से बचने

www.dawateislami.net

لِلْمُتَّقِیْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ ﴿٣٤﴾ اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِیْنَ
डर वालों के लिये उन के रब के पास[36] चैन के बाग़ हैं[37] क्या हम मुसल्मानों को
كَالْمُجْرِمِیْنَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ ۫ وقفة كَیْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾ ج اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِیْهِ
मुजरिमों सा कर दें[38] तुम्हें क्या हुवा कैसा हुक्म लगाते हो[39] क्या तुम्हारे लिये कोई किताब है
تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّ لَكُمْ فِیْهِ لَمَا تَخَیَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾ ج اَمْ لَكُمْ اَیْمَانٌ عَلَیْنَا
जिस में पढ़ते हो कि तुम्हारे लिये उस में जो तुम पसन्द करो या तुम्हारे लिये हम पर कुछ क़समें हैं
بَالِغَةٌ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ ۙ لا اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٩﴾ ج سَلْهُمْ اَیُّهُمْ
क़ियामत तक पहुंचती हुई[40] कि तुम्हें मिलेगा जो कुछ दा'वा करते हो[41] तुम उन से पूछो[42] उन में
مع ١٥ بِذٰلِكَ زَعِیْمٌ ﴿٤٠﴾ ج اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ج فَلْیَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا
कौन सा इस का ज़ामिन है[43] या उन के पास कुछ शरीक हैं[44] तो अपने शरीकों को ले कर आएं अगर
صٰدِقِیْنَ ﴿٤١﴾ یَوْمَ یُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّیُدْعَوْنَ اِلَی السُّجُوْدِ فَلَا
सच्चे हैं[45] जिस दिन एक साक़ खोली जाएगी (जिस के मा'ना अल्लाह ही जानता है)[46] और सज्दे को बुलाए जाएंगे[47] तो न
یَسْتَطِیْعُوْنَ ﴿٤٢﴾ لا خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ط وَقَدْ كَانُوْا
कर सकेंगे[48] नीची निगाहें किये हुए[49] उन पर ख़्वारी चढ़ रही होगी और बेशक दुन्या
یُدْعَوْنَ اِلَی السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَذَرْنِیْ وَمَنْ یُّكَذِّبُ بِهٰذَا
में सज्दे के लिये बुलाए जाते थे[50] जब तन्दुरुस्त थे[51] तो जो इस बात को[52] झुटलाता है उसे मुझ पर

के लिये अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करते। **36 :** या'नी आख़िरत में **37 शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन ने मुसल्मानों से कहा था कि अगर मरने के बा'द फिर हम उठाए भी गए तो वहां भी हम तुम से अच्छे रहेंगे और हमारा ही दरजा बुलन्द होगा जैसे कि दुन्या में हमें आसाइश है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई जो आगे आती है। **38 :** और इन मुख़्लिस फ़रमां बरदारों को उन मुआ़निद बाग़ियों पर फ़ज़ीलत न देंगे, हमारी निस्बत ऐसा गुमान फ़ासिद (है) **39 :** जहालत से **40 :** जो मुन्क़तअ़ न हों, इस मज़्मून की **41 :** अपने लिये अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक ख़ैरो करामत का। अब अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़िताब फ़रमाता है **42 :** या'नी कुफ़्फ़ार से **43 :** कि आख़िरत में उन्हें मुसल्मानों से बेहतर या उन के बराबर मिलेगा **44 :** जो इस दा'वे में उन की मुवाफ़क़त करें और ज़िम्मेदार बनें **45 :** ह़क़ीक़त में वोह बातिल पर हैं, न उन के पास कोई किताब जिस में येह मज़्कूर हो जो वोह कहते हैं, न अल्लाह तआ़ला का कोई अ़हद, न कोई उन का ज़ामिन न मुवाफ़िक़। **46 :** जुम्हूर के नज़्दीक कश्फ़े साक़ शिद्दत व सुऊबते अम्र से इबारत है जो रोज़े क़ियामत ह़िसाब व जज़ा के लिये पेश आएगी। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि क़ियामत में वोह बड़ा सख़्त वक़्त है। सलफ़ का येही त़रीक़ा है कि वोह इस के मा'ना में कलाम नहीं करते और येह फ़रमाते हैं कि हम इस पर ईमान लाते हैं और इस से जो मुराद है वोह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ तफ़्वीज़ करते हैं। **47 :** या'नी कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन ब त़रीक़े इम्तिह़ान व तौबीख़। **48 :** उन की पुश्तें तांबे के तख़्ते की त़रह सख़्त हो जाएंगी। **49 :** कि उन पर ज़िल्लत व नदामत छाई हुई होगी। **50 :** और अज़ानों और तक्बीरों में "حَیَّ عَلَی الصَّلٰوةِ حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ" के साथ उन्हें नमाज़ व सज्दे की दा'वत दी जाती थी **51 :** बा वुजूद इस के सज्दा न करते थे उसी का

الْحَدِيْثِ ؕ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۴﴾ۙ وَ اُمْلِيْ لَهُمْ ؕ

छोड़ दो[53] क़रीब है कि हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता ले जाएंगे[54] जहां से उन्हें ख़बर न होगी और मैं उन्हें ढील दूंगा

اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿۴۵﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿۴۶﴾

बेशक मेरी ख़ुफ़्या तदबीर बहुत पक्की है[55] या तुम उन से उजरत मांगते हो[56] कि वोह चट्टी (तावान) के बोझ में दबे हैं[57]

اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿۴۷﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ

या उन के पास ग़ैब है[58] कि वोह लिख रहे हैं[59] तो तुम अपने रब के हुक्म का इन्तिज़ार करो[60] और उस

كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿۴۸﴾ؕ لَوْ لَاۤ اَنْ تَدٰرَكَهٗ وقف لازم

मछली वाले की तरह न होना[61] जब इस हाल में पुकारा कि उस का दिल घुट रहा था[62] अगर उस के रब की ने'मत

نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿۴۹﴾ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ

उस की ख़बर को न पहुंच जाती[63] तो ज़रूर मैदान पर फेंक दिया जाता इल्ज़ाम दिया हुवा[64] तो उसे उस के रब ने चुन लिया

فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۵۰﴾ وَ اِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ

और अपने क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों (ह़क़दारों) में कर लिया और ज़रूर काफ़िर तो ऐसे मा'लूम होते हैं कि गोया अपनी बद नज़र लगा कर

بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿۵۱﴾ۘ وَمَا هُوَ وقف لازم

तुम्हें गिरा देंगे जब क़ुरआन सुनते हैं[65] और कहते हैं[66] येह ज़रूर अ़क़्ल से दूर हैं और वोह[67] तो नहीं

नतीजा है जो यहां सज्दे से महरूम रहे। **52 :** या'नी क़ुरआने मजीद को **53 :** मैं उस को सज़ा दूंगा। **54 :** अपने अ़ज़ाब की त़रफ़, इस त़रह कि बा वुजूद मा'सियतों और ना फ़रमानियों के उन्हें सिह़्ह़त व रिज़्क़ सब कुछ मिलता रहेगा और दम बदम अ़ज़ाब क़रीब होता जाएगा **55 :** मेरा अ़ज़ाब शदीद है। **56 :** रिसालत की तब्लीग़ पर **57 :** और तावान का उन पर ऐसा बारे गिरां है जिस की वज्ह से ईमान नहीं लाते **58 :** ग़ैब से मुराद यहां लौहे मह़फ़ूज़ है **59 :** इस से जो कुछ कहते हैं। **60 :** जो वोह उन के ह़क़ में फ़रमाए और चन्दे उन की ईज़ाओं पर सब्र करो। "قِيْلَ اِنَّهٗ مَنْسُوْخٌ بِاٰيَةِ السَّيْفِ" **61 :** क़ौम पर ता'जीले ग़ज़ब में और मछली वाले से मुराद ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام हैं। **62 :** मछली के पेट में ग़म से। **63 :** और अल्लाह तआ़ला उन के उ़ज़्र व दुआ़ को क़बूल फ़रमा कर उन पर इन्आ़म न फ़रमाता **64 :** लेकिन अल्लाह तआ़ला ने रह़मत फ़रमाई **65 :** और बुग़्ज़ो अ़दावत की निगाहों से घूर घूर कर देखते हैं। **शाने नुज़ूल :** मन्क़ूल है कि अ़रब में बा'ज़ लोग नज़र लगाने में शोहरए आफ़ाक़ थे और उन की येह ह़ालत थी कि दा'वा कर कर के नज़र लगाते थे और जिस चीज़ को उन्हों ने गज़न्द (नुक़्सान) पहुंचाने के इरादे से देखा देखते ही हलाक हो गई, ऐसे बहुत वाक़िआ़त उन के तजरिबे में आ चुके थे, कुफ़्फ़ार ने उन से कहा कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को नज़र लगाएं तो उन लोगों ने ह़ुज़ूर को बड़ी तेज़ निगाहों से देखा और कहा कि हम ने अब तक न ऐसा आदमी देखा न ऐसी दलीलें देखीं और उन का किसी चीज़ को देख कर ह़ैरत करना ही सितम होता था, लेकिन उन की येह तमाम जिद्दो जह्द कभी मिस्ल उन के और मकाइद (मक्रो फ़रेब) के जो रात दिन वोह करते रहते थे बेकार गई और अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को उन के शर से मह़फ़ूज़ रखा और येह आयत नाज़िल हुई। ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया जिस को नज़र लगे उस पर येह आयत पढ़ कर दम कर दी जाए। **66 :** बराहे ह़सद व इनाद और लोगों को नफ़रत दिलाने के लिये सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की शान में जब आप को क़ुरआने करीम पढ़ते देखते हैं **67 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ या सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم।

www.dawateislami.net

اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۲﴾

मगर नसीहत सारे जहां के लिये[68]

اٰیاتھا ۵۲ | ٦٩ سُوْرَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ ٧٨ | رکوعاتھا ٢

सूरए हाक़्क़ह मक्किय्या है, इस में बावन आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اَلْحَآقَّةُ ﴿۱﴾ مَا الْحَآقَّةُ ﴿۲﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ﴿۳﴾ كَذَّبَتْ

वोह ह़क़ होने वाली[2] कैसी वोह ह़क़ होने वाली[3] और तुम ने क्या जाना कैसी वोह ह़क़ होने वाली[4] समूद और आ़द ने

ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿۴﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ﴿۵﴾ وَاَمَّا عَادٌ

इस सख़्त सदमा देने वाली को झुटलाया तो समूद तो हलाक किये गए ह़द से गुज़री हुई चिंघाड़ से[5] और रहे आ़द

فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿۶﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ

वोह हलाक किये गए निहायत सख़्त गरजती आंधी से वोह उन पर क़ुव्वत से लगा दी सात रातें और आठ

اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا ۙ فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ

दिन[6] लगातार तो उन लोगों को उन में[7] देखो पिछड़े (मरे) हुए[8] गोया वोह खजूर के डंड (सूखे तने)

خَاوِيَةٍ ﴿۷﴾ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ﴿۸﴾ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ

हैं गिरे हुए तो तुम उन में किसी को बचा हुवा देखते हो[9] और फ़िरऔ़न और उस से अगले[10]

وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿۹﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً

और उलटने वाली बस्तियां[11] ख़ता लाए[12] तो उन्हों ने अपने रब के रसूलों का हुक्म न माना[13] तो उस ने उन्हें बढ़ी चढ़ी

68 : जिन्नों के लिये भी और इन्सानों के लिये भी या ज़िक्र ब मा'ना फ़ज़्लो शरफ़ के है इस तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आ़लम ﷺ तमाम जहानों के लिये शरफ़ हैं इन की त़रफ़ जुनून की निस्बत करना कूर बात़िनी है। (مدارک) 1 : सूरए हाक़्क़ह मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बावन 52 आयतें, दो सो छप्पन 256 कलिमे, एक हज़ार चार सो तेईस 1423 ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी क़ियामत जो ह़क़ व साबित है और इस का वुक़ूअ़ यक़ीनी व क़त़्ई है जिस में कोई शक नहीं। 3 : या'नी वोह निहायत अ़जीब व अ़ज़ीमुश्शान है। 4 : जिस के अहवाल व अह़वाल और शदाइद तक फ़िक्रे इन्सानी का त़ाइर परवाज़ नहीं कर सकता। 5 : या'नी सख़्त होलनाक आवाज़ से 6 : चहार शम्बा से चहार शम्बा (बुध से बुध) तक, आख़िर माहे शव्वाल में निहायत तेज़ सरदी के मौसिम में 7 : या'नी उन दिनों में 8 : कि मौत ने उन्हें ऐसा ढा दिया 9 : कहा गया है कि आठवें रोज़ जब सुब्ह़ को वोह सब लोग हलाक हो गए तो हवाओं ने उन्हें उड़ा कर समुन्दर में फेंक दिया और एक भी बाक़ी न रहा। 10 : उस से भी पहली उम्मतों के कुफ़्फ़ार 11 : ना फ़रमानियों की शामत से मिस्ल क़ौमे लूत़ की बस्तियों के, येह सब 12 : अफ़आ़ले क़बीह़ा व मआ़सी व शिर्क के मुरतकिब हुए 13 : जो उन की त़रफ़ भेजे गए थे।

www.dawateislami.net